International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.9 No.6 July – Aug 2022

समकालीन कहानीकारों की कहानियों में आर्थिक चेतना विशेष संदर्भ : ममता कालिया एवं मैत्रेयी पुष्पा

उज्ज्वल राठौर
पीएच.डी शोधार्थी,हिन्दी साहित्य ,सिंघानिया विश्वविद्यालय पचेरी बड़ी (राजस्थान)
Corresponding Author- उज्ज्वल राठौर
ईमेल:- hpujjawalrathore2385@gmail.com
DOI- 10.5281/zenodo.7070967

सारांश

अर्थ सामाजिक सशक्तिकरण का मुलभूत साधन है और मानव जीवन कि सम्पूर्ण जरूरतों एवं क्रिया-कलापों पर अपना प्रभाव डालता है। हमारे समाज मे अर्थ पर अधिपत्य पुरूष का रहा है। प्राचीन समय से लेकर समाज में ऐसे नियम बनाए गए जिससे स्त्री आर्थिक रूप से हमेशा पुरूष पर निर्भर रही। भूमंडलीकरण युग ने स्त्री को आत्मनिर्भर बनाने के द्वार खोल दिए। स्त्री को आर्थिक चेतना जब जागृत हुई तब उसने पुरूष की आर्थिक पराधीनता को अस्वीकार कर, घर की चार दीवारी लांघकर अपनी आर्थिकी को सुदृढ करने का प्रयास किया। आज स्त्री केवल अपने परिवार का पालन पोषण करने में सक्षम नहीं है। वह तो पुरूष के कंधे से कंधा मिलाकर उसकी सहचर बन गई है। ममता कालिया एवं मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी कहानियों के माध्यम से स्त्री को आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास किया है। वह चाहती है कि स्त्री शिक्षित होकर अपने स्वरुप को सवारने का प्रयास करे, जिसका प्रमुख चरण आर्थिक रूप से सुदृढ होना है। अतः उन्होने स्त्री की आर्थिक चेतना को जागृत कर उसे आर्थिक स्वाबलंबन बनाने का प्रयास किया है।

मुख्य शब्द:- सशक्तिकरण, आत्मनिर्भर, स्वाबलंबन, आर्थिक पराधीनता, अधिपत्य।

समकालीन प्रतिनिधि कहानियों मैं स्त्री चेतना :- आर्थिक संदर्भ

प्रस्तावना

अर्थ सामाजिक सशक्तिकरण का मुलभूत साधन है और अर्थ को कमाने के लिए शिक्षा प्रथम चरण है। शिक्षा के द्वारा स्त्रियाँ में ज्ञान, योग्यता एवं कौशल आदि का विकास होता है और इनकी बदौलत वह आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सकती है। स्त्री को अगर अपनी स्थिति समाज मैं मजबूत बनानी है तो उसे आर्थिक रूप से मजबूत होना आवश्यक हो जाता है। आज के इस बदलते युग में स्त्रियों का कार्यक्षेत्र विस्तृत हो गया है उनका कार्यक्षेत्र घर कि चार-दीवारी से बाहर निकलकर कार्यस्थल तक पहुंच गया है। जिस कारण उनके शोषण की नई-नई स्थितियां भी उत्पन्न हुई है। अतः आवश्यकता है आज की स्त्री को अधिक बोल्ड होने की। आज वैश्वीकरण एवं भूमंडलीकरण ने स्त्रियों के लिए सार्वजनिक क्षेत्र के दरवाजों को खोल दिया है और अपनी तमाम अच्छाइयों एवं बुराइयों सहित सभी स्त्रियों को घर से बाहर निकल कर आत्मनिर्भर बनने के अवसर दिए है। समकालीन युग स्त्री को आर्थिक स्वाबलंबन बनाने में मददगार साबित हुआ है।

ममता कालिया की कहानियों में आर्थिक चेतना

ममता कालिया ने अपनी कहानियों में ऐसी स्त्रियों को गढ़ा है, जो स्वतंत्र विचारों वाली है। वह परम्पराओं की जंजीरों को तोड़कर अपनी अस्मिता की तलाश में हैं। इनकी कहानियों का उद्देश्य स्त्री को केवल प्रेम और सफल वैवाहिक जीवन ही नही है

बल्कि वह स्त्री को आत्मविश्वास से भरकर हर क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाना चाहती है। उनकी कहानी के स्त्री पात्र अपने जीवन में आने वाली सम्स्याओं का सामना करके अपने अस्तित्व को निखारने में लगे हैं।

'जाँच अभी जारी है' कहानी की नायिका 'अपर्णा' शिक्षित स्त्री है। जो अपनी बैंक में नौकरी करने की इच्छापूर्ति के लिए कॉलेज के लेक्चरशिप छोड़ देती है। वह अपना कार्य पूर्ण लग्न, सच्चाई और नैतिकता जैसे मूल्यों के साथ करती है। अपने कार्य के प्रति सम्पूर्ण समर्पित होने के बाद भी उसके ऊपर भ्रष्टाचार का आरोप लगाया जाता है। अपर्णा पर भ्रष्टाचार का आरोप अपने दफ्तर के अफसरों को खुश न करने के कारण लगाया जाता है। पुरूष आज भी स्त्री को आगे बढ़ता हुआ नही देख सकता और सोचता है स्त्री केवल उसकी इच्छाओं की पूर्ति करती रहे। जिसका विरोध अपर्णा करती है, जिस कारण उसे नौकरी से निकाला जाता है और उस पर जाँच बैठाई जाती है। अपर्णा के दफ्तर से जाने के बाद एक क्लर्क कहता है-"उसके चले जाने के बाद उसने चपरासी (जो उसका परामर्शदाता भी था) से कहा, 'इसी तरह यह अपने पिताजी के साथ आती रहेगी तो दसियों साल इन्क्रायरी चलवाऊंगा, रो न दे तो कहना।"1

ममता कालिया की 'वसंत सिर्फ एक तारीख' में कहानी स्त्री द्वारा अन्य स्त्रियों के शोषण को चित्रित करती है। आज कार्यस्थल या घर-परिवार में केवल पुरूष ही स्त्रियों का शोषण नहीं करते, स्त्रियाँ भी स्त्रियों का शोषण करती है। कहानी में प्राचार्या शान्ता सक्सेना एक टेम्पररी प्राइमरी टीचर के गर्भावस्था के आखरी चरण में अवकाश मांगने पर उसे नौकरी से इस्तीफा देने के लिए कहती है। अध्यापिका श्रीमती शान्ता सक्सेना से पूछती है "दीदी, वह मेरी एप्लीकेशन आपने देखी होगी?"

"हाँ, बताया तो तुम्हे । कल ही कहा था न, तुम्हे छुट्टी नहीं मिल सकती । टेम्पररी प्राइमरी टीचर को हम कैजुअल के सिवा और कोई छुट्टी नही देते।"

"आपकी बात सही हे, दीदी, लेकिन डॉक्टर ने हमें अब आने को मना किया है। "अध्यापिका गर्भावस्था के अंतिम चरण में थी।"2

"इस्तीफा दे दो, तुम्हारी भी मुश्किल दूर हो जाएगी हमारी भी, ठीक है न!"3

कार्यस्थल पर पुरूष ही नहीं स्त्रियाँ भी अपने पद का दुरुपयोग करती है।

स्त्रियाँ खुद को आत्मनिर्भर बनाने के लिए घर से बाहर कदम तो रख चुकी है लेकिन उनकी मुश्किलें उनका पिछा नहीं छोड़ रही है। फिर भी वह बिना हिम्मत हारे आगे बढ़ती जा रही है और अपनी कामयाबी का डंका बजा रही है।

मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों में आर्थिक चेतना:-

मैत्रेयी पुष्पा ने स्त्री और पुरुष को समरूप देखना चाहा। उनका मानना है अर्थोपार्जन ही एक ऐसा माध्यम है जो उसे पितृसता के बंधनो से मुक्त कर सकता है। स्त्री को आत्मनिर्भर बनाने के लिए उसे शिक्षित करना सबसे आवश्यक है। मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी कहानियों में ग्रामीण और शहरी स्त्रियों की आर्थिक स्थिति का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है।

मैत्रेयी पुष्पा ने 'उज्रदारी' कहानी में ग्रामीण विधवा स्त्री शांति की दयनीय स्थिति का चित्रण किया गया है। पति की मृत्यु के बाद उसका जेठ उसे और उसके बेटे सोमू को मजदूर बनाकर उनसे सम्पत्ति से सारे अधिकार छिन लेता है। वह सोमू का स्कूल जाना बंद करवा देता है। सोमू पढ़ना चाहता है लेकिन आर्थिक विपन्नता के कारण शांति मजबूर है। अपनी और सोमू कि इस स्थिति को देखकर उसे अपने पति पर गुस्सा आता है और वह कहती हैं-"पता नही क्यों, जिस पति के लिए जार-जार रोटी रही पूरे पंद्रह दिन, रोटी-पानी का धयान छोडकर उसकी छाया में लीन रही अब तक, उसी आदमी के लिए गालियाँ निकली मुँह से-इन निरदइयों में छोड़ गया सत्यानासी। कमाई कर-करके इनकी जेबे भरता रहा और बड़ाई लुटता रहा। कुछ कहती तो उछल जाता कि बड़े भाई से

हिस्सा-बाँट करूँ? वे मेरी गृहस्ती नही देखते क्या? फूट पड़वाने में औरते माहिर होती हैं।"4

मैत्रेयी पुष्पा ने 'पगला गई है भागवती 'में भी बालविधवा भागवती कि करुण स्थिति का चित्रण किया है। छोटे उम्र में ही विधवा होने के कारण उसे घर-परिवार, धन-सम्पति से सब अधिकार छिन लिए जाते है। दो वक्त की रोटी और किसी के आश्रय में रहने के लिए वह शोषण का शिकार होती है। "सदैव जी-जान लगाकर जिज्जी के हुकुम पर दौड़ती रही । आम-जामुन तोड़ते, बहनोंतों को गोद खिलाते उमर उतरने को हो आई है अब तो।"5 अधिकतर विधवा स्त्रियाँ आर्थिक शोषण का शिकार होती है। पति की मृत्यु के बाद परिवार के अन्य सदस्य विधवा स्त्री और उसके बच्चों की सम्पति छिन लेते हैं और उनको भाग्य भरोसे छोड़ देते है।

'रिजक' कहानी कि नायिका 'लल्लन' भी आर्थिक तंगी का शिकार है। पति आसाराम के हवालात में डाले जाने के बाद बुढ़ी सास और बच्चों की जिम्मेदारी उसके कंधो पर आ जाती है। वह पैसों की कमी के कारण अपने पति को भी जेल से छुड़ा पाने में असमर्थ होती है। अपनी स्थिति को सोचते हुए स्वयं से कहती है "घुटनों में मुँह गाड़े बेठी है लल्लन। ऐसे कब तक चलेगा? कब तक खिंचेगी पूरी गृहस्थी का बोझ? बेआधार, बरोजगार कैसे बैठा रहे कोई ? भूखे पेट को कब तक मसोसे ? कैसे थे हम? क्या धजा बन गई? मुकदर की मार कहो सो भी नही। अपने रिजक से, अपने पेशे से बेइमानी करी, तो भोगेगे नही?"6

अध्ययन का उद्देश्य

1.स्त्री को शिक्षित कर उसकी आर्थिक चेतना जागृत करना।

2. स्त्री को संविधान द्वारा दिए गए मौलिक अधिकारों के प्रति जागरूक करना।

3. स्त्री को समाज द्वारा किए जाने वाले भेदभाव के प्रति सचेत करना।

4. स्त्री को आत्मनिर्भर बनाना।

5. स्त्री को पुरुष की सहगामिनी बनाना।

निष्कर्ष:-

किसी देश के विकास एवं पतन की आधारशिला वहां की आर्थिक व्यवस्था होती है। उसी तरह मानव के विकास का बुनियादी आधार भी अर्थ है। समाज में पुरुष तो आर्थिक रूप से सम्पन्न हुआ लेकिन स्त्री युगों- युगों से पुरुष पर आश्रित रही। नारी-सशक्तिकरण जैसे आन्दोलन निरंतर स्त्री को सशक्त बनाने प्रयासरत है। जिस कारण स्त्रियाँ आज कठिन माने जाने वाले क्षेत्रों में भी अपनी योग्यता का प्रदर्शन कर रही है। आर्थिक अधिकारों के मिलने एवं आर्थिक रूप से सुदृढ होने के कारण स्त्रियों का सशक्तिकरण हुआ है। आज स्त्री यह समझने में सक्षम है कि वह पुरुष की सम्पति नही है बल्कि एक स्वतंत्र व्यक्तितत्व का इंसान है। समकालीन कहानीकारों ने अपनी कहानियों के माध्यम से स्त्री को सम्पूर्ण सशक्त बनाने का प्रयास किया है। उनका उद्देश्य है कि प्रत्येक स्त्री अपने अस्तित्व को पहचाने एवं अपनी आर्थिक पराधीनता की बेड़ियों को तोड़कर स्वयं आत्मनिर्भर बने।

सन्दर्भ सूची

1.ममता कालिया, प्रतिनिधि कहानियाँ, जाँच अभी जरी है, पृ.71

2.ममता कालिया, प्रतिनिधि कहानियाँ, वसंत-सिर्फ एक तारीख, पृ.121

3.ममता कालिया, प्रतिनिधि कहानियाँ, वसंत-सिर्फ एक तारीख, पृ.122

4.मैत्रेयी पुष्पा, प्रतिनिधि कहानियाँ, उज्रदारी पृ.46

5.मैत्रेयी पुष्पा, प्रतिनिधि कहानियाँ, पगला गई भागवती, पृ.135

6.मैत्रेयी पुष्पा, प्रतिनिधि कहानियाँ, रिजक, पृ.157